

मा न नृके वल्लपद कामिने ॥ नमामि ॥ ८॥ मार्क नृमि
दं स्तोत्रं यपठेद्वि वरुं निधौ ॥ तस्य मृत्यु भयं ना
स्ति अग्नि वीरु विवर्जय ॥ ९॥ पुत्रार्थे लभते पुत्रं
धनार्थे लभते धनं विद्यार्थे लभते विद्या माहा
देव प्रसादतः ॥ १०॥ अत्रात्र कैंकमं

रत्न काम

मन

॥१५॥ गहो मां देवा दुष्टे स्वेच्छा नुना भयवर्धित्वा ॥ प्रा
च्योर भेतुमा मैद्रो आग्नेयो मग्नी देवता ॥ १६ ॥ दधि
नेतु वाराहि नेति त्यां खड्गधारिणी ॥ पुति च्या वोठणी
दायव्या मृगवाहि ॥ १७ ॥ रक्षो दुर्दा च्या को मारि र्शि
त्या शुलधारिणी ॥ १८ ॥ ब्रह्मा नि मे रक्षो दुष्टस्तो द्वे क

वीत धा ॥ १८ ॥ एवं देशादिशोरक्षे च मृगशराववा
हना ॥ जयो मे चाग्रत पातु विजया पापं पृच्छत ॥ १९ ॥
अजिता वामपा चेतुर्दक्षि ने चा परा ॥ शिखा मे घात
निरक्षो दुर्मानुद्धि ववस्तीता ॥ २० ॥ माला धारि लला
माला धारि ललाटे तु भवो रक्षो दश श्री नी ॥ २१ ॥
त्रा च भूयो मधे यम य द्य च ता शि के ॥ २१ ॥

शंखिनिचक्षुषोकोनेश्वोत्तयोद्वास्वसिनी॥क
पोलकालिकारक्षोत्कर्णमुलेतुरीकरि॥१२॥ओ
ष्ठयोश्चामृतकलाजिह्वायाचक्षरस्वति॥दन्ता
रक्षोतुकोमारिकांमन्त्रचचीरिदका॥१३॥घोषि
कावेत्रयंयानमाहंमायाचमल्लुके॥कामाक्ष
चीतुवीरुषाद्वावनेश्वरसंगला॥१४॥घीवाप्रभ

द्रुकालिबपृष्ठवशधनुर्दुरिनीलग्नीवावही
वृद्धेनलकांनलकुवरी॥स्कंधयोरखेजिनीरक्षोद्वा
ह्वैवजुषारिणी॥हस्तयोर्दूरिणनीरक्षेदेविक्काचो
गुलीयुच॥१५॥नखोश्रुलेधारीरक्षोत्कर्णोक्षो
न्नलेधरि॥स्तनोरक्षेन्माहादेवीमनशोकवि
नाशिनी॥१६॥हृदयलालितादेविउदरेश्रुलधा
रिणी॥नाभौचक्षामिनीरक्षोर्गुह्यंगुह्यंशरान

धा ॥ २८ ॥ पूतना का मि कामे फुंगुदं मम हि घटा हि
नी ॥ कंदा भगवा रक्षे जा नु नि वीथ्ये वा सिनी ॥ २९ ॥
जंघे माहा बलार दो सर्व काम फलं पुदा ॥ दंता कशाति
नार दो लो शांथे वोद्र के सिनी ॥ ३० ॥ राम कू ये मु को
मारित्य चं वागी श्रुति था ॥ रक्रम आवसां मां सान्य
स्त्रि मेदां सिषा र्वती ॥ ३१ ॥ अत्रा लिकाल ए नि धु धित
व मुकु तं स्वर्णि ॥ पद्मा वति पद्म को से कं चो दा म
रित था ॥ ज्वाला मुची न व ज्वाला म मे धे सर्व

सी विष्णु ॥ शुक्रं वस्त्राणि मे रक्षे ह्य पादु त्रै स्व
रित था ॥ ३३ ॥ अहंकारं मनो बुद्धि रक्ष मे धर्म धा
रिणि ॥ प्रा न पा मो त था व्या न मुदा नां व स मा न
कं ॥ ३४ ॥ वज्र हस्ता च मे रक्षन् प्रा न कल्पा रा स्य
भना ॥ रसद पं च गंधं व स दृश्य र्शे च योगी ती
॥ ३५ ॥ सर्वं रजस मथै वरक्षे नारायणि सदा

॥ आयु रक्षतु वाराहि धर्म रक्षतु वैष्णवि ॥ ३६ ॥ य
शः किंति शत क्ष्मी भूधनं विद्या वचं क्रि एणि ॥
जो त्रिमिद्राणि मेरु क्षत्य भुं मेरु क्ष चंडी को ॥ ३७ ॥
पुत्रो नर क्ष माहाल क्ष्मी भाज्यो रक्षतु नैरवी
॥ यथा नै सुप थार क्ष आर्ग क्ष मं करित था ॥ ३८ ॥
ए जंदारे माहाल क्ष्मी विजया सर्व तो व तु ॥ ३९ ॥

हिनंतु यस्या न वार्जितं कवचेन तु ॥ ३९ ॥ तत्र र
क्षतु मादे विजयंति द्वा र्वासिनी ॥ पर मे कां न
गच्छतु यद्दुःखं भूमात्मनः ॥ ४० ॥ कवचे नावृता
नित्यं यत्र तत्रैव गच्छति ॥ तत्र तत्रार्थला भश्च
विजया सर्व कां सि क ॥ ४१ ॥ ययं चीतयते कामं

तं तं प्राप्नोति निश्चितं ॥ परमेस्वर्यर्जं मतुलं च प्राप्नो
ति भुतले पुमान् ॥ ४२ ॥ निर्भये जायते मर्त्या संगे
मेघ पराजित ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्पूजं कवचेनापु
त पुमान् ॥ ४३ ॥ इदं तु देव्या कवचं देवानां सर्व
दुर्लभं ॥ य पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यां श्रद्धया वा

॥ ४४ ॥ देवी काला भवेत्तस्य त्रैलोक्ये चापराजित
जि वेदव्यसतं बाहु मलया मृत्युर्विवर्जित ॥ ४५ ॥
न स्यात्ति व्याधय सर्वे लब्धता विस्कोत का दय ॥ स्था
वां जंगमं वापी कृति संवापी यंदोयं ॥ ४६ ॥ अभी
चारिण सर्वाणि स त्रये त्रानि भुतले ॥ भुवरा

खेचराश्वकुलजाश्लेषदशिका ॥ ४७ ॥ सहजा
कुलजामालाओंकीनिशांकितथा ॥ अंतरीक्ष
पराधाराशक्तिन्यश्वमहाला ॥ ४८ ॥ ग्रहभूतघो
शाचाश्वयक्षगंधर्वराक्षसा ॥ वृक्षराक्षसवेताला
कुम्भाशाभौवांदय ॥ ४९ ॥ नश्यतिदर्शनांतस्यकव

बहुदोसंस्थिते ॥ मानोन्नतिमवेदुज्यंतेजोवृ
द्धिकांपरम् ॥ ५० ॥ यसमावर्द्धतेस्वपीकृतिमं
दितभूतले ॥ जपेतसप्तसतिबंडीकृत्यातुकवच
पुरा ॥ ५१ ॥ यावद्वृक्षमंडलं धत्ते सरोलवतका नने
॥ तावन्मिष्टंतिमेदीन्यांसंतातिपुत्रपौत्रकी ॥ ५२ ॥

देहांते परमं स्थानं यत्सुरैः विदुस्तमं ॥ प्राप्नोति
पुण्यं नित्यं माहं मायाप्रसादतः ॥ ५३ ॥ इति
कुर्वाकव्यं ॥ ॥ जयंति मे गलाकायभट्ट
कालिकप्राप्तिनी ॥ युगैश्च माशिक्षाविस्वाहास्व
धाननस्तुते ॥ १ ॥ मधुकेटनवीद्रावीविधात्री

परदेनम ॥ रूपं देहो जयं देहो जस्य देहो द्विष्य नस्तु
॥ २ ॥ महीशुनिर्नातिविधात्रिकादेनम ॥ ३ ॥
रूपं ॥ एकविजवधेदेवि बंडमुठविनासिनी ॥
रूपं ॥ ४ ॥ शुभस्य वनि शुभते शुभनाक्षस्य
मादिनि ॥ रूपं ॥ ५ ॥ वंहीतागि जुगै देवी देवी

आर्य समाज काव्य

1.717

ASMA ARCHIVES

मंगलार्चनं गंगा वाराहस्तु

स्वभागे दायिनि ॥ अर्प ॥ ६ ॥ आचिंतेतु पवरी ते स
र्वसत्रुघ्नीनासिनी ॥ अर्प ॥ ७ ॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या
बद्धो केदुरीतापदे ॥ अर्प ॥ ८ ॥ सुवभ्यो भक्तिपु
रुवत्प्रांचि के व्याधीनासिनि ॥ अर्प ॥ ९ ॥ देही
स्वभागे मारोग्यदेहि देवी परिचुषी ॥ अर्प ॥ १० ॥

बोदेहावीयतां नासं विदेहि पा संसुयं ॥ रूपं ॥ १११ ॥ विदे
हि देवी कल्याणं विदेहि पा संसुयं ॥ रूपं ॥ ११२ ॥
आतुरेसिरोत्सनिष्टुष्ट चरणवी के ॥ रूपं ॥
॥ ११३ ॥ विद्यावंतय सस्वतल क्षी वी त ज नं कु
॥ रूपं ॥ ११४ ॥ पुचं ह देत्यद्वयिष्टे च डी के प्र न ता

यमे ॥ रूपं ॥ ११५ ॥ चतर्भुज्यचतुर्वे के संस्तुते प
निस्वहि ॥ रूपं ॥ ११६ ॥ कृष्णसंस्तुता देवी स
स्वप्न क्वा सदा वि के ॥ रूपं ॥ ११७ ॥ हि मां च ल
शुदा ना थं शंस्तुते पामेश्वरि ॥ रूपं ॥ ११८ ॥ इ
द्राणि मति सद्भावसत्के ते परमेश्वरि ॥ रूपं ॥

॥ रूपं ॥ १८ ॥ देवि प्रचंडोऽहं देव्यर्पवी ना
शिनो ॥ रूपं ॥ १९ ॥ देवी भक्तज नोदामदत्ता न
न्दोद नंवी के ॥ रूपं ॥ २० ॥ पत्नी मनोरमा देहि
मनवृत्ता नुसारिणि ॥ नारिणि दुर्गा संसार
सागरस्य कुलद्वयं ॥ २१ ॥ इदं लोत्रं पठित्वा

तु माहात्म्यं पठेत् नरः ॥ स तु सप्तसप्ततिं सख्य
वलनाप्नोति संपदं ॥ २२ ॥ इति त्वर्गलास्तुति
॥ वीरुर्ध्वानन्देहाय त्रिवेदाद्यो वयं वक्ष्ये
॥ अथ प्राप्ती नीमिमांसाय नमः सोमा दुर्धारिणि
॥ २३ ॥ सर्वमेतद्धोनायस्तु संश्रान्तमपि किञ्च कं

॥ सोपि क्षममवाप्ते सततं जायेत तत्परः ॥ १ ॥
सिंहा तु चातनादिनीवस्तु नित्यकलां न्यापि ॥ य
ते नस्तु वतादेवी स्तोत्रविन्दे न रुष्या ॥ ३ ॥ तसं
त्रमोषधं तं जनकिचित् दंष्ट्रिविद्युते ॥ स्व
स्वपि सी संतिलो कं को विना हरे दिना जा

येन सिद्यंति सर्वमुच्चातनाष्टकम् ॥ ४ ॥ समग्रा
शेषिः सिद्यंति लोकसं कामिमां हरे ॥ कृत्यानि मे
त्रयो मास सर्वमेव मीदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रवे चरि
कायास्तु तद्यगुप्रचकार ॥ समाप्ता यं सुपुंरप्यन
ताय थावन्ती मंत्रा ॥ ६ ॥ सोपि क्षममवाप्ते

न जाप्यमिदं सदा ॥ ११ ॥ शनैस्तु जाप्यमिदं नृलोत्रे
 संयमिच्छन् वक्त्रे ॥ भवते समग्रापि ततः पारम्य
 मेव ततः ॥ १२ ॥ श्रुत्वा येन तत्पुत्रादेन सो भाग्यराज्य
 संपदः ॥ स तु ह्यनिपरो मोक्षस्तु यते सान किं
 जने ॥ १३ ॥ इति भगवत्यकिलकं ॥ ॥ ॥
 श्रीमद्भक्तानं ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ शुभं श्रीश
 दासि वं लो नमः श्रममम श्रीमर्कण्डेन विरत
 स्तुतं दत्तं अमान गौत्रस्य मम श्रीमूर्तुजयपा
 थकामनायार्थः सर्वरोगशुक्लमूर्तुपरी
 हरणार्थः श्रीसदासि वंदे वता गौरीसक्रीसक

लेपापाक्षयार्थं धर्मार्थं कामार्थं जपे विनीयो
ग ॥ इन्द्रं पशुपतिं धातुं नलकं एतं नमामि ॥ नमामि
मिससिने देवदिने नमो मूर्तुत रियति ॥ १॥ कातकं
एतं कालमूर्त्यु कालाग्नी कालासासनं ॥ नमामि
॥ २॥ नीलकण्ठं विष्णुं धातुं मलं मिलं जंपुभु

॥ नमामि ॥ ३ ॥ कामदेवमाहादेवलोका नाथ मगन
गुह्य ॥ नमामि ॥ ४ ॥ देवदेवजगन्नाथ देवसवृषव
धोज ॥ नमामि ॥ ५ ॥ गंगाधरं नाहा इन्द्रं सकलं
शुलयागिरिण ॥ नमामि ॥ ६ ॥ भस्मधुलीतसर्वा
ग. नागा नरधारिणो नमामि ॥ ७ ॥ आनन्दपर